पाठ 8. हरिया की सूझबूझ

पाठ का परिचय

किसी गाँव में एक ज़मींदार रहता था। वह क्रूर और अत्याचारी था। अपने यहाँ काम करने वालों को वह बहुत सताता था। काम कराकर उन्हें उचित मज़दूरी नहीं देता था। ज़मींदार की अपनी कोई संतान न थी। उसने गाँव में यह कहलवा दिया कि जो भी मेरे यहाँ काम करके मुझे खुश कर देगा, उसे मैं अपना उत्तराधिकारी बना लूँगा। उसी गाँव में हरिया नाम का एक बालक रहता था। वह होशियार भी था और चालाक भी। उसने जब यह खबर सुनी तो ज़मींदार के यहाँ काम करने की ठान ली। वह निडरता से उसके घर में काम करने लगा। हरिया अपनी सूझबूझ से ज़मींदार के कामों को पूरा करने का ऐसा रास्ता निकालता जिससे खुद ज़मींदार का ही नुकसान हो जाता था। अंततः ज़मींदार को उसकी सूझबूझ के आगे घुटने टेकने पड़े। अंत में उसने हरिया को अपना उत्तराधिकारी बना लिया। ज़मींदार की पत्नी ने भी उसे 'बेटा' कहकर गले लगा लिया।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

होशियारी और समझदारी से काम करने वाले लोग लक्ष्य को जल्दी ही प्राप्त करते हैं।

पाठ का वाचन

बच्चों से पाठ का मौन वाचन करवाएँ। बच्चों को एक-एक परिच्छेद देकर उससे संबंधित प्रश्न बनाने को कहें। बनाए गए प्रश्नों को बच्चे मौन वाचन समाप्त होने पर अपने दूसरे सहपाठियों से पूछें। ऐसा करने से यह पता चल जाएगा कि बच्चों ने पाठ को ध्यान से पढ़ा है या नहीं। एक बच्चा पाठ की शुरुआत करे। दूसरा बच्चा उसे आगे बढ़ाए। इस प्रकार धीरे-धीरे सभी बच्चे मिलकर पाठ को पूरा करें।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्न प्रश्नों पर आधारित चर्चा करें –

- क्या तुम्हारा पाला कभी ज़मींदार जैसे किसी व्यक्ति से पड़ा है?
- क्या तुम्हारे परिवार में ऐसे स्वभाव वाला कोई व्यक्ति है?
- सूझबूझ से काम बन जाते हैं। क्या तुम्हारे जीवन में भी ऐसी कोई घटना घटी है?